5. म्यान का रंग

दो राजा थे – खड्ग सिंह और कड्क सिंह। दोनों में पुश्तैनी दुश्मनी थी। बात-बात में उनकी तलवारें एक-दूसरे पर तन जाती थीं। लेकिन दोनों ही राजाओं को दुश्मनी का कारण नहीं पता था। बस, दुश्मनी थी... इसलिए निभाना ज़रूरी था।

दोनों राजाओं की सेना और उनके मंत्री इनके बिना वजह के इन झगड़ों से बहुत परेशान हो गए थे।

एक दिन कड्क सिंह और खड्ग सिंह के महामंत्री आपस में मिले। उन्होंने दोनों राजाओं के झगड़े को खत्म करने के लिए एक उपाय सोचा। दोनों राज्यों की सीमा पर एक पीपल का पेड़ था। दोनों ने किसी तरह अपने-अपने राजा को आपस में वहीं मिलने के लिए तैयार कर लिया।

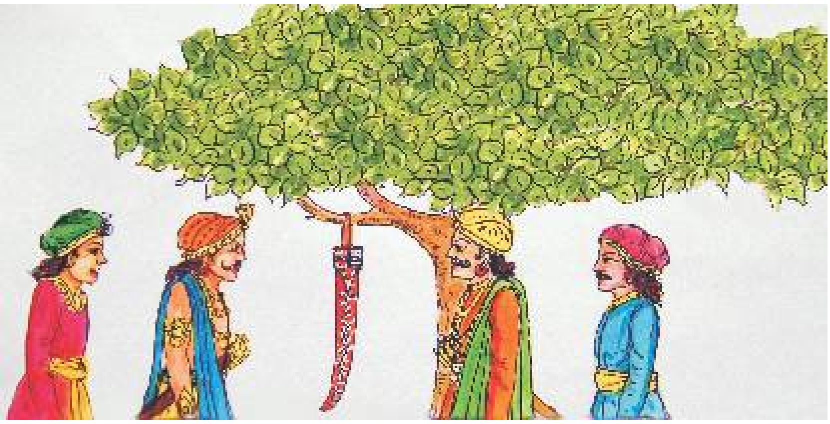

जिस दिन दोनों राजाओं को पीपल के पेड़ के नीचे मिलना था, उस दिन सुबह ही उस पेड़ की एक डाल पर दोनों राज्यों के मंत्रियों ने एक कीमती म्यान लटका दी थी।

निश्चित समय पर कड्क सिंह और खड्ग सिंह पीपल के पेड़ के पास पहुँच गए। एक पेड़ के इस तरफ अपनी सीमा में था तो दूसरा पेड़ के उस तरफ अपनी सीमा में । दोनों पेड़ के करीब पहुँचे। दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। फिर उनकी नज़र पेड़ पर लटकी म्यान पर पड़ी।

खड्ग सिंह ने म्यान को देखकर कहा, "वाह! कितना बढ़िया म्यान है। लाल

रंग के इस म्यान में जड़े रत्न इसकी खूबसूरती को और अधिक बढ़ा रहे हैं।"

कड़क सिंह ने कहा, "क्या कह रहे हो खड्ग सिंह! म्यान बहुमूल्य ज़रूर है, पर यह तो सफेद रंग का है और इस पर मोती जड़े हैं।"

खड़्ग सिंह को गुस्सा आ गया। बोले, "तुम झूठ बोल रहे हो! मुझे साफ दिखाई दे रहा है कि यह म्यान लाल रंग का है और इस पर रत्न जड़े हैं।"

अब कड़क सिंह को भी गुस्सा आ गया। वे भी तेज़ स्वर में बोले, "लगता है तुम अंधे हो गए हो या फिर दुश्मनी छोड़ना ही नहीं चाहते। मैं कह रहा हूँ कि म्यान सफ़ेद है और इस पर मोती जड़े हैं।"

"मुझे तो लगता है कि तुमने लड़ने के लिए ही मुझे बुलाया है।" इतना कहकर खड़्ग सिंह ने तलवार निकाल ली।

कड़क सिंह कहाँ पीछे हटने वाले थे। उन्होंने भी अपनी तलवार खींच ली। दोनों ने अपनी तलवारें हवा में लहराईं और लड़ने के लिए तैयार हो गए। वे जैसे ही एक-दूसरे पर वार करने के लिए आगे बढ़े, वहाँ छिपे दोनों राज्यों के महामंत्री सामने आ गए।

वे बोले, "राजन! रुकिए, लड़ने से पहले हर पहलू पर विचार कर लेने में ही समझदारी है।"

"क्या मतलब?" दोनों राजाओं ने चौंककर पूछा।

"आप दोनों इस म्यान के कारण लड़ने पर उतारू हैं, लेकिन यदि आप दोनों इस म्यान को दोनों तरफ से देख लेते तो लड़ाई की नौबत ही नहीं आती। असल में आप दोनों सही बोल रहे हैं। यह म्यान एक तरफ से लाल है और दूसरी तरफ से सफेद।" महामंत्रियों ने अपने-अपने राजाओं को समझाते हुए कहा।

"क्या...!" दोनों राजा आश्चर्यचकित रह गए।

"जी हाँ।" मंत्रियों ने उत्तर दिया, "महाराज, लड़ाई अकसर गलतफहमी के कारण होती है। यदि आप दोनों इस म्यान की जाँच-परख कर लेते तो यह नौबत नहीं आती।

अब दोनों राजाओं को अपनी-अपनी गलती का अहसास हुआ। उन्हें अपने महामंत्रियों की बात समझ में आ गई। उस दिन के बाद उन्होंने प्रण कर लिया कि वे भविष्य में कभी नहीं लड़ेंगे।

इस प्रकार मंत्रियों की सूझबूझ से दोनों राजाओं की पुश्तैनी दुश्मनी समाप्त हो गई।

शब्दार्थ

पुश्तैनी	–	कई पीढ़ियों से सम्बन्धित
अभिवादन करना	–	श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना।
नौबत	–	परिस्थिति

रंगों की दुनिया

'म्यान का रंग' कहानी की कौन-सी घटना आपको पसंद आई? उसका चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए।

राजा और ....

'राजा' से जुड़े कुछ शब्द वर्ग पहेली में छिपे हैं। जैसे– राज, न्याय। उन्हें खोजकर लिखिए –

रा	ज	म	ह	ल	न्या
ज	सिं	से	मु	श्क	य
द	हा	ना	कु	र	न
र	स	प्र	ट	सै	ल
बा	न	जा	सु	नि	वा
र	सि	पा	ही	क	र

------------ ------------ ------------ ------------ ------------

------------ ------------ ------------ ------------ ------------

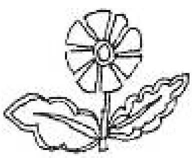

6. उपकार का बदला

सोमन एक गरीब आदमी था। वह बूढ़ा हो गया था। अपने गुज़ारे के लिए वह कुछ-कुछ धंधे किया करता था। गर्मी के महीने में वह ताड़ के पंखों को बेचकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था।

गर्मी के महीने में पूरे दिन कचहरी, बाज़ार और मुहल्लों में घूम-घूमकर पंखे बेचता था। लेकिन दोपहर को जब सारे लोग आराम करने लगते थे तो उस समय उसके पंखे नहीं बिकते थे। उस समय वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करता था। दोपहर ढलने के बाद, गर्मी कम होने पर वह फिर से पंखे बेचने चला जाता था।

दोपहर में जब वह विश्राम करने आता था तो बिके हुए पंखों के पैसे में से कुछ पैसे निकाल लेता था। उन्हीं पैसों से बाज़ार से खाने का सामान खरीद कर लाता और खा लेता। कभी मुरही तो कभी फुटहा, कभी कचड़ी तो कभी गुलगुला खरीद लेता।

एक दिन दोपहर के समय सोमन पेड़ के नीचे बैठा था। नाश्ते की पोटली खोलने की जुगत कर रहा था। उस पेड़ से हटकर कुछ दूरी पर एक पुराना बगीचा था जिसमें बंदरों का बसेरा था। उनमें से एक मोटा-सा बंदर पेड़ से थोड़ी दूरी पर आ कर बैठ गया। वह बंदर शायद भूखा था। वह सोमन की तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगा। सोमन को उस पर दया आ गई और उसने दो गुलगुले उसकी तरफ फेंके। बंदर ने लपककर गुलगुलों को उठाया और खा लिया।

अब रोज़ दोपहर को सोमन बंदर को खाने के लिए कुछ न कुछ देता। एक दिन सोमन आया, लेकिन आज उसका दिल छोटा था। उसका एक भी पंखा आज नहीं बिका था। पैसे पास में थे नहीं, इसलिए वह खाने के लिए कुछ खरीद भी नहीं सका। बाकी दिनों की भाँति वह बंदर फिर से उसके पास आकर बैठ गया। सोमन चापाकल पर जाकर केवल पानी पीकर पेड़ के नीचे आकर लेट गया। बंदर उसकी तरफ टुकुर-टुकुर देखता रहा।

सोमन लेटे हुए ही बंदर की ओर देखकर बोला—"हे हनुमान जी। आज तो एक भी पंखा नहीं बिका इसलिए खाने के लिए कुछ लाया नहीं। तुम्हें क्या दूँ? आज तुम भी संतोष करो।"

बंदर उसी तरह देखता रहा, जैसे कहता हो—क्या करोगे? ऐसा ही होता है।

सोमन को तो भूख लगी थी। लेकिन वह करता क्या? आँख बंद कर मन मारकर लेट गया। सिरहाने में पंखे की गठरी रखी थी। बंदर भी थोड़ी दूरी पर वैसे ही बैठा था।

अचानक बंदर उठा। छलाँग मारकर पंखे की गठरी के पास पहुँच गया। जब तक सोमन हड़बड़ाते हुए उठकर बैठा, तब तक बंदर दो पंखों को खींच लिया। सोमन, 'अरे ! अरे !' करता रह गया और बंदर एक हाथ में पंखा लेकर तीन पैरों पर फांदते हुए चल दिया। सोमन असहाय-सा उसे देखता रहा।

सोमन ने उसे थोड़ी दूर पर सड़क के किनारे एक डेरे की ओर जाते हुए देखा। बंदर का पीछा करना उसके वश की बात नहीं थी।

सोमन दुखी हो गया। मन ही मन सोचने लगा, 'आह ! एक तो आज पंखा नहीं बिका और उस पर से यह बंदर दो पंखे भी लेकर चला गया। अब इसका भी घाटा मुझको सहना होगा।' वह सोच में डूब गया।

कुछ समय बीता होगा। वह बंदर पंखा लेकर जिधर गया था, उधर से ही आता दीख पड़ा। वह तीन पैरों पर फाँदते हुए आ रहा था। उसके हाथ में एक बहुत बड़ा अधपका पपीता था—आधा पीला और आधा हरा। बंदर सोमन से कुछ दूर हट कर खड़ा हो गया और पपीते को सोमन की ओर लुढ़का दिया।

तब तक सोमन की आँख लग गई थी। बंदर सोमन को निश्चिंत देख एक बार

गुर्राया। इस पर सोमन की आँखें खुल गईं। वह उठते हुए बोला, "अरे हनुमान जी। ये कहाँ से तुम ले आए?"

सोमन ने एक बार बंदर को देखा, फिर पपीते को देखा। लेकिन उसने पपीते को छुआ नहीं। बंदर कुछ देर तक वैसे ही बैठा रहा। फिर सोमन पर खोंखियाते हुए दौड़ा। सोमन डर गया। बंदर खोंखियाते हुआ आया और उसने पपीते को सोमन के और नजदीक लुढ़का दिया। फिर वह अपनी जगह पर जाकर बैठ गया और सोमन की ओर देखने लगा।

सोमन डरते हुए पपीते को उठा लिया। सोमन को पपीता उठाते देख बंदर आश्वस्त हो गया। बंदर को शांत देख सोमन ने अपने कमर से चाकू निकाला, पपीते का छिलका हटाया और उसके चार टुकड़े किए। एक-डेढ़ टुकड़ा बंदर की ओर फेंक दिया। सोमन बाकी पपीते को खाने लगा। पपीता इतना बड़ा था कि उसका पेट भर गया।

सोमन ने सोचा 'चलो, बंदर दो पंखे ले गया तो मेरा पेट भी भर गया। समझूँगा पंखा का दाम मुझे मिल गया।' धूप ढलने पर सोमन पंखे बेचने चल पड़ा।

आगे सड़क के किनारे एक बहुत बड़ा डेरा था। उधर से जाते हुए अन्य दिनों की भाँति हाँक लगाई–पंखा ले लो, पंखा !

'ओ पंखेवाले!', डेरे से किसी ने पुकारा ।

सोमन फाटक खोल डेरे के अंदर गया। वहाँ एक भद्र पुरुष खड़े थे। उन्होंने सोमन को बरामदे पर फेंके हुए पंखों को दिखाते हुए पूछा, "ये दोनों पंखे तुम्हारे हैं?"

"जी सरकार!"

''ये पंखे एक बंदर फेंक गया था। ले जाओ अपने पंखे''।

सोमन ने चारो तरफ देखा। एक तरफ पपीते के तीन-चार पेड़ और उस पर ढेर सारे अधपके पपीते लटके हुए थे। सोमन ने पूछा–"सरकार ! क्या बंदर ने आपका पपीता भी तोड़ा है।"

भद्रपुरुष थोड़ा चकित होते हुए बोले–"हाँ ! हाँ ! पंखों को यहीं फेंक वह एक पपीता तोड़ ले गया था।"

सोमन बोला—"सरकार तब यह पंखा मैं नहीं लूँगा।"

"क्यों ?"

"सरकार, वह बंदर पंखे के बदले में मुझे पपीता दे गया था। इसे आप रख लीजिए। मुझे इसका दाम मिल गया है।"

भद्रपुरुष को बंदर के इस कारनामे और पंखेवाले के उत्तर पर बड़ा आश्चर्य हुआ। सोमन ने पूरी घटना उन्हें बतायी।

भद्रपुरुष को इससे और अधिक आश्चर्य हुआ। वे बोले, "पंखेवाले, जब बंदर जैसे जंगली-जंतु में इतना विवेक है, तब मैं तो मनुष्य हूँ। तुम्हारा पंखा मैं कैसे लूँगा? तुम पंखों को छोड़ दो। इनका कितना दाम होगा यह बताओ।"

सोमन सकुचाते हुए बोला—"सरकार, यह बिकता तो है चार रुपए जोड़ा। लेकिन आप जो भी दे देंगे, वह मेरे लिए बहुत होगा।"

भद्रपुरुष ने जेब से पाँच रुपये का एक सिक्का निकाला और सोमन को दे दिया। सोमन पैसे लेकर चल पड़ा, सड़क की ओर। सड़क पर आकर उसने फिर से हाँक लगाई—'पंखा ले लो, पंखा !'

—रामदेव झा

अभ्यास

पाठ में से

1. कहानी में जो-जो हुआ उनके सामने ✓ का निशान लगाइए –

   (क) सोमन ताड़ के पंखे बेचता था। ☐
   (ख) सोमन ने बंदर के बच्चे को गुलगुला दिया। ☐
   (ग) बंदर सोमन के दो पंखे लेकर चला गया। ☐
   (घ) बंदर सोमन के लिए पपीता लाया था। ☐
   (ङ) बंदर पैसे के बदले पपीता लाया था। ☐
   (च) सोमन छह रुपए जोड़े पंखे बेचता था। ☐

2. सोमन गुज़ारे के लिए क्या करता था?
3. सोमन को बंदर पर दया क्यों आ गई?
4. बंदर किसके बदले में पपीता लाया था?
5. भद्रपुरुष ने सोमन को दो पंखों के बदले कितने पैसे दिए ?

बातचीत के लिए

1. सोमन अपने पंखे बेचने के लिए कैसे आवाज़ लगाता था? आप पंखों को बेचने के लिए कैसे आवाज़ लगाएँगे?
2. सामान बेचने वाले अपने सामान बेचने के लिए आवाज़ क्यों लगाते हैं?
3. अगर आपको ये सामान बेचने पड़े तो आप कैसे आवाज़ लगाएँगे –

   - मखाना
   - मछली
   - सब्जी
   - आम
   - चाय
   - बरतन
   - चप्पल
   - आईसक्रीम
   - मूँगफली

4. बंदर ने सोमन की क्या सहायता की और कैसे?
5. क्या सोमन ने बंदर को अपने साथ रखा था?
6. आज ताड़ के पंखे का दाम क्या है?

क्या होता

1. अगर सोमन ने बंदर को खाने का सामान न दिया होता?
2. अगर भद्रपुरुष बंदर को पपीता न लेने देता?

खोजबीन

कहानी में से उन अंशों को खोजिए जिनसे पता चलता है कि

1. सोमन और बंदर एक-दूसरे के मन की बात समझते हैं।
2. सोमन बहुत दयालु है।
3. गर्मी के मौसम की बात है।
4. भद्रपुरुष भला आदमी था।

समझ की बात

1. दोपहर को सोमन के पंखे क्यों नहीं बिकते थे?
2. मुरही, फुटहा, कचड़ी और गुलगुला कैसे बनते हैं?
3. बंदर सोमन पर क्यों गुर्राया था?

आपकी भाषा में

1. **आप अपनी मातृभाषा में नीचे लिखे शब्दों एवं वाक्यों को कैसे कहेंगे ?**
   - गुलगुला, गठरी, पपीता, कारनामा, छह रुपए जोड़ा
   - 'सरकार! तब यह पंखा मैं नहीं लूँगा।'
   - 'पंखा ले लो, पंखा!'
   - 'ये कहाँ से ले आए तुम?'
2. **इस कहानी को अपनी मातृभाषा में सुनाइए।**

भाषा के रंग

1. 'वह सोमन की तरफ **टुकुर-टुकुर** देखने लगा।' इस वाक्य में टुकुर-टुकुर देखने का क्या मतलब है?

   देखने के इन तरीकों में क्या अंतर है? इनका मतलब समझाने के लिए इन

शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

घूरना	**अपलक देखना**	**टेढ़ी नज़र से देखना**
निहारना	**टकटकी लगाना**	**आँखें फाड़कर देखना**

2. नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित शब्दों के बदले ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों को दुबारा लिखिए कि उनका मतलब न बदले –

(क) वह दोपहर को **विश्राम** करता था।

(ख) वह ताड़ के पंखे बेचकर अपने परिवार का **भरण-पोषण** करता था।

(ग) आज तुम भी **संतोष** करो।

(घ) सोमन **सकुचाते** हुए बोला।

----

3. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए –

* इस पर सोमन की **आँखें खुल गईं।**
* सारी बात जानकर सोमन की **आँखें खुल गईं।**

दोनों वाक्यों में **आँखें खुल गईं** के अर्थ में अंतर है।

पहले वाक्य में **आँखें खुल गईं** का मतलब जागने से है जबकि दूसरे वाक्य में **आँखें खुल गईं** का मतलब सच्चाई का पता लगने से है। दूसरे वाक्य में **आँखें खुल गईं** एक मुहावरा है।

नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए उनके मतलब बताइए–

आँखें लगना, आँखों पर पर्दा पड़ना, आँखें फैलना, आँखें चुराना, आँखें दिखाना, आँखों की किरकिरी होना।

4. नीचे दिए गए वाक्यों में मोटे अक्षरों में लिखे सर्वनाम किसके लिए आए हैं, लिखिए –

वाक्य	किसके लिए
(क) लेकिन **वह** करता क्या?	-------------------------
(ख) लेकिन **उसने** पपीते को छुआ नहीं।	-------------------------
(ग) तब **मैं** तो मनुष्य हूँ।	-------------------------
(घ) **ये** दोनों पंखे तुम्हारे हैं?	-------------------------

आपकी कल्पना

1. 'उपकार का बदला' शीर्षक कहानी की किसी एक घटना को संवाद के रूप में लिखिए।
2. अपने दोस्त को सोमन और बंदर के बारे में बताते हुए एक पत्र लिखिए।

7. चतुर चित्रकार

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र।
इतने ही में वहाँ आ गया, यम राजा का मित्र।।

उसे देखकर चित्रकार के, तुरंत उड़ गए होश।
नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह न गया कुछ जोश।।

फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप।
बोला–सुंदर चित्र बना दूँ, बैठ जाइये आप।।

उकरू-मकरू बैठ गया वह, सारे अंग बटोर।
बड़े ध्यान से लगा देखने, चित्रकार की ओर।।

चित्रकार ने कहा–हो गया, आगे का तैयार।
अब मुँह आप उधर तो करिए, जंगल के सरदार।।

बैठ गया वह पीठ फिराकर, चित्रकार की ओर।
चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर।।

बहुत देर तक आँख मूँदकर, पीठ घुमाकर शेर।
बैठे-बैठे लगा सोचने, इधर हुई क्यों देर।।

झील किनारे नाव लगी थी, एक रखा था बाँस।
चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भरके साँस।।

जल्दी–जल्दी नाव चलाकर, निकल गया वह दूर।
इधर शेर था धोखा खाकर, झुँझलाहट में चूर।।

शेर बहुत खिसियाकर बोला, नाव ज़रा ले रोक।
कलम और कागज़ तो ले जा, रे कायर डरपोक।।

चित्रकार ने कहा तुरंत ही, रखिए अपने पास।
चित्रकला का आप कीजिए, जंगल में अभ्यास।।

–रामनरेश त्रिपाठी

अभ्यास

कविता में से

1. कविता में शेर को यम राजा का मित्र क्यों कहा गया है?
2. शेर ने चित्रकार को नाव रोकने के लिए क्यों कहा?
3. शेर चित्रकार की ओर ध्यान से क्यों देखने लगा था?
4. चित्रकार ने शेर को क्या कहकर बुलाया?
5. शेर को देखकर चित्रकार की क्या दशा हुई?

कल्पना और अनुमान

1. अगर चित्रकार की जगह आप होते तो शेर से कैसे बचते?
2. यदि झील के किनारे नाव नहीं होती तो चित्रकार अपनी जान कैसे बचाता?
3. अगर शेर चित्रकार का कहा मानकर दूसरी तरफ मुँह नहीं करता तो क्या होता?
4. चित्रकार ने शेर का कैसा चित्र बनाया था? चित्र बनाकर दिखाइए–

उड़ गए होश

1. "उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश।
   नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह न गया कुछ जोश।"

   (क) किसे देखकर चित्रकार के होश उड़ गए?

   (ख) जंगल में क्या-क्या था?

(ग) 'होश उड़ने' का अर्थ है –

नींद उड़ना ☐ बहुत घबरा जाना ☐ हैरान होना ☐

(घ) आपके होश कब उड़ते हैं?

- मेरे होश उड़ जाते हैं जब ----------------------------
- मेरे होश उड़ जाते हैं जब ----------------------------

(ङ) 'होश उड़ना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है– 'घबरा जाना' इसी 'घबरा जाना' को बताने के लिए कई और मुहावरे हैं, जैसे–

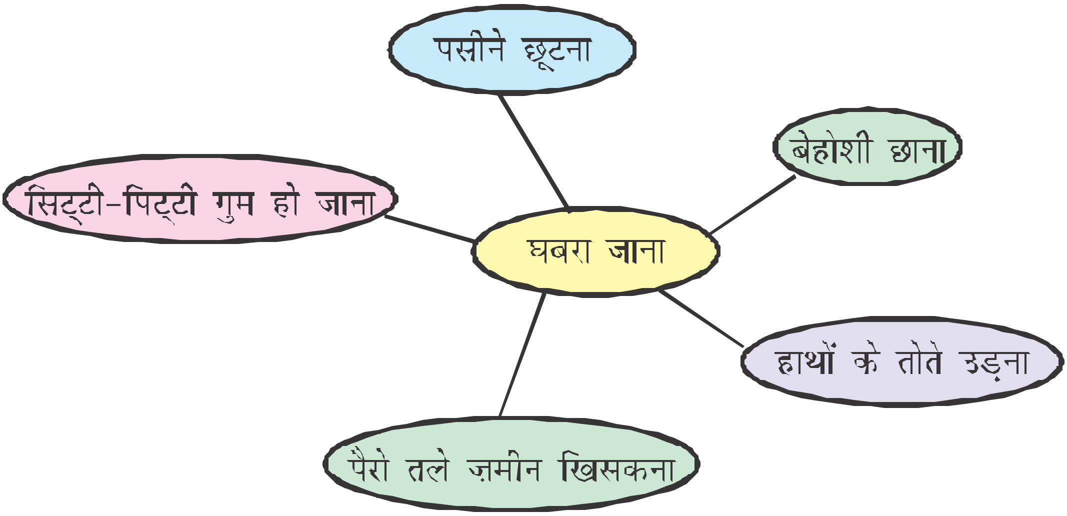

2. आप इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।

चुपके से

'चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर।'

(क) चुपके से खिसकने का क्या मतलब है?

(ख) चित्रकार चुपके से क्यों खिसकने लगा?

(ग) चोर चुपके से क्यों खिसकते होंगे?

(घ) किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपको भी चुपके से खिसकना पड़ा हो?

(ङ) बताइए, ये कब-कब चुपके से खिसकते होंगे–

- आपकी कक्षा के बच्चे
- पिताजी
- माँ
- आपका दोस्त
- बहन
- भाई

(च) आप कुछ ऐसे काम भी करते होंगे जिन्हें चुपचाप न किया जाए तो डाँट पड़ती है। किसी एक घटना के बारे में बताइए।

भाषा के रंग

1. **'चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र।'** कविता की इस पंक्ति को **गद्य में इस तरह से लिखा जाता है –**

'चित्रकार सुनसान जगह में चित्र बना रहा था।'

आप नीचे दी गई पंक्तियों को गद्य में लिखिए –

(क) इतने ही में वहाँ आ गया, यम राजा का मित्र।

(ख) झील किनारे नाव लगी थी, एक रखा था बाँस

(ग) जल्दी-जल्दी नाव चलाकर निकल गया वह दूर।

(घ) उकड़ू-मुकड़ू बैठ गया वह, सारे अंग बटोर।
बड़े ध्यान से लगा देखने, चित्रकार की ओर।।

----

2. तुरंत उड़ गए <u>होश</u>।
रह न गया कुछ <u>जोश</u>
बना रहा था <u>चित्र</u>
यम राजा का <u>मित्र</u>

(क) ऊपर की पंक्तियों में अगर 'जोश', 'होश', 'मित्र' और 'चित्र' की जगह कोई दूसरा शब्द रखा जाए तो कविता पढ़ने में क्या अंतर आएगा?

(ख) नीचे दी गई पंक्तियों में आप भी कुछ ऐसे ही समान लय वाले शब्दों का प्रयोग कीजिए–

देख आँधी, तूफ़ान और धूल।
जाना कहाँ था, मैं गया ----।

आया चोर, आया चोर।
कहते-कहते हो गई ----।

मुन्नी लगी सुनाने बात।
सुनते-सुनते हो गई ----।

गुड़ की सगाई थी, चींटी रानी आई थी;
साथ ले उपहार में, मोटा चींटा --- थी।

शब्दों की दुनिया

1. **उधर शेर था धोखा खाकर झुंझलाहट में चूर॥**

   (क) यहाँ 'चूर' शब्द का क्या मतलब है?

   (ख) 'चूर-चूर होना', 'थककर चूर होना' और 'चकनाचूर होना' इन मुहावरों का प्रयोग वाक्यों में कीजिए जिससे इनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।

2. **नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए –**

   कहा-कहाँ   **आधी-आँधी**

   (क) दोनों को बोलने में क्या अंतर है? इनके अर्थ में क्या अंतर है? इस अंतर का कारण बताएँ?

   (ख) वाक्यों में आए मोटे शब्दों में चंद्रबिंदु का सही प्रयोग कीजिए–

   - आप **कहा** जा रहे हैं?
   - मैंने **बास** की टोकरी बनाई।
   - मेरी **आख** में कुछ पड़ गया है।

- लगता है **<u>आधी</u>** आने वाली है।
- सारा **<u>गाव</u>** खुश था।
- मैंने जल्दी से सामान **<u>बाधा</u>** ।

3. **'चित्र'** में **'कार'** जोड़ने से **'चित्रकार'** शब्द बना है।
   आप भी **'दार'** लगाकर शब्द बनाइए –

दुकान	–	दार	–	----------------
हवा	+	-----	–	----------------
समझ	+	-----	–	----------------
जान	–	-----	–	----------------
शान	+	-----	–	----------------

4. चित्र बनाने वाले को 'चित्रकार' कहते हैं। इसी प्रकार नीचे के स्तम्भ 'क' में स्तम्भ 'ख' से सही शब्द मिलाइए –

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
संगीत बनाने	मूर्तिकार
गीत लिखने वाला	कलाकार
कला दिखाने वाला	संगीतकार
कहानी लिखने वाला	कहानीकार
मूर्ति बनाने वाला	गीतकार

5. 'बोला – **सुंदर** चित्र बना दूँ, बैठ जाइए आप।'
   इस पंक्ति में चित्र की क्या विशेषता बताई गई है? रिक्त स्थान में भरिए–
   चित्र ---------------- है।

संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

स्तंभ 'क' में संज्ञा शब्द और स्तंभ 'ख' विशेषण शब्द दिए गए हैं। इनका सही मिलान कीजिए—

स्तंभ 'क'	स्तंभ 'ख'
पहाड़	चतुर
पानी	घना
पेड़	ऊँचा
शेर	डरावना
चित्रकार	हरा
जंगल	सच्चा
मित्र	ठंडा

आपकी चतुराई

किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपने भी चतुराई से काम किया हो।

आपकी कलम से

'चतुर चित्रकार' शीर्षक कविता को कहानी के रूप में लिखिए और सुनाइए।

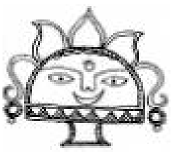

8. ननकू

"का रे ननकूआ, आज इसकूल न जबहीं रे ऽऽऽ?" अम्मा ने पूछा। "न मइया, इसकूल तक नदी के पानी चढ़ अलई हे।" ननकू ने चिल्लाकर कहा। ननकू का स्कूल तो गाँव के सबसे निचले हिस्से में है जहाँ हर साल सावन-भादों में बाढ़ का पानी चढ़ आता है।

बरसात का महीना ननकू को बहुत प्रिय है। आम-जामुन के पेड़ पर चढ़ना और गुल्ली-डंडा खेलना उसे अच्छा लगता है।

हर बार की तरह ननकू अपनी धुन में मस्त, गुल्ली-डंडा उछालता, गाँव की छोटी पगडंडी पर सरपट दौड़ा चला जा रहा था। इतने में उसे आवाज़ सुनाई दी, "ननकू रे ऽऽ अरे ननकू!" उसे लगा कि कोई दूर से पुकार रहा है। पलटकर देखा तो दिदिया हाथ हिला-हिला कर उसे बुला रही थी। ननकू के जी में आया कि वह अनेदखा करके निकल जाए। फिर उसने सोचा कि देख ही आवें, क्या बात है ? वरना मइया से जाकर दस शिकायतें करेगी, जिसमें आधी तो पुरानी होंगी, जिनके लिए कई बार वह झिड़की भी खा चुका होगा। खैर, सोचता हुआ ननकू पास जा पहुँचा। देखा, दिदिया दोनों हाथ में गोबर लपेटे खड़ी है। वह बोली "ननकुआ, हालि से गोइठवा थापा देहीं तो. बड़ी ज़ोर से पानी आवइत हई।"

उसने दीदी को सलाह दी, ''दिदिया रे, गोइठा मत थोप, घाम न निकलतई चार दिन तक फिर सुखतउ कइसे? हमर मान तो, ई सब गोबर मट्टी में गाड़ देहीं, खाद बन जइतउ।'' ननकू ने अपनी उत्तम सलाह पर दिदिया से एक धौल खाया। खैर, इतने सुहावने मौसम में बड़े बेमन से वह गोइठा थापने बैठा।

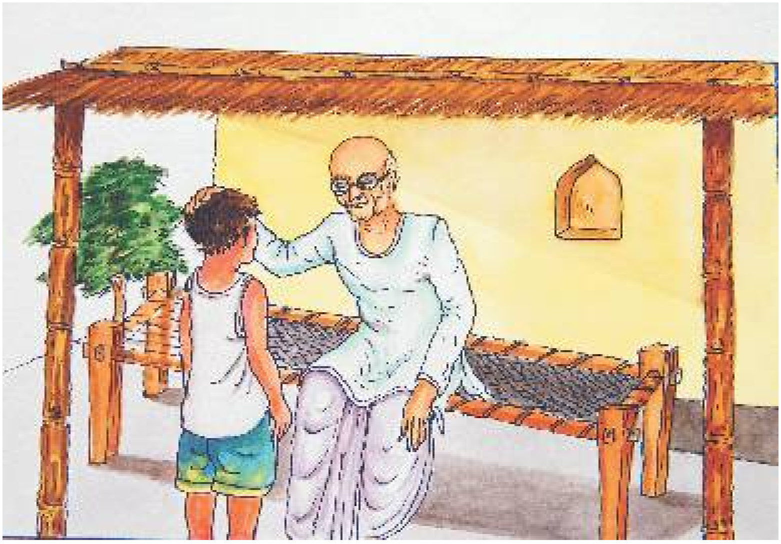

दो-चार ही गोइठा थापा होगा कि टिप-टिप-टिप पानी बरसने लगा। दिदिया गोबर की टोकरी दीवार की ओट में रख आई और हाथ धोने चली गई। ननकू को बुलाकर उसके भी हाथ धुलवाए। फिर बोली, ''सीधे घर जइहे रे, लगहई जोर से पानी पड़तई। बाबा निमिया तर बइठल होथीं। जो, चल जो हालि-हालि, समझलें न?''

ननकू अपने घर के सामने नीम के पेड़ तक पहुँच गया जहाँ उसके बाबा खटोले पर बैठे थे। पास जाकर ननकू ने बाबा से कहा, "बाबा! घर में भीतरे चलऽ, जोर से पानी पड़तई।"

"के हई ननकू बचवा? अरे,हम तो केतना देरी से बइठल हली। तू ही तो हमरे बुढ़ापे के लाठी हव, आउर अंधरिया के दीया!" हुलसकर बाबा ने उसे पकड़ लिया और उठने लगे। कुछ दिनों से बाबा को दिखाई नहीं दे रहा था। अम्मा कहती है कि आँख में सफेदी आ गई है। ननकू ने बाबा को घर के अंदर पहुँचा दिया। अब क्या करें, पानी तो ज़ोर से पड़ने लगा। घर से बाहर निकलना मुश्किल।

तभी दादी की आवाज़ आई ''अरे ननकू बचवा, तोर दिदिया आउर अम्मा कहाँ

रह गेलथुन ई बरसात में। ई बार कवन नछत्तर में पानी पड़े लगलई कि छुटते न हई।'' दादी फिर बोली, "अइसन बरसात आउर समुंदर जइसन उफान तो हम कहिनो ना देखले हली।''

ननकू घर से निकलकर और तेज़ी से पीपल के पेड़ की ओर भागा। उसके कई संगी-साथी उधर ही रहते थे। लोग अपना सामान उठाकर झोंपड़ी की छत पर रख रहे थे और गाय-भैंस को शहर जाने वाली सड़क के किनारे बाँध रहे थे, क्योंकि उससे ऊँची जगह और कोई नहीं थी। ननकू ललमुनियाँ की झोपड़ी में घुस गया, देखा उसकी दादी और अम्मा सामान उठाने में लगी हुई थीं। पानी थोड़ा दूर था। ननकू भी उनकी सहायता करने लगा।

सारा सामान उठते-उठाते पानी झोपड़ी के अंदर घुटने तक आ गया। सामान से भरी टोकरी सिर पर रखकर जब वह बाहर निकला तो पाया चारों ओर पानी फैल गया है और बड़ी तेज़ी से उसके घर की तरफ भी बढ़ रहा है। ननकू ने टोकरी सिर पर से उतारकर नीचे रखी और दौड़ पड़ा अपने घर की ओर। दादी देखते ही बोली, "कहाँ चल गेलहीं हल रे? चल दू कौर माड़-भात खा लेहीं, आउर सामान उठाहीं।''

कोठरी में जाकर ननकू अँधेरे में ही जैसे-तैसे सामान बटोर-बटोर कर टोकरी में रखने लगा। जब टोकरी सिर पर रख बाहर निकला तो देखा कि आँगन में छाती भर पानी चढ़ आया है। दालान में भी घुटने भर पानी है और बाबा खटिया पर खड़े-खड़े चिल्ला रहे हैं। अम्मा, दादी और दिदिया का कहीं पता नहीं था। ननकू ने झट टोकरी पानी में फेंकी और बाबा की तरफ लपका, जल्दी से उनको खटिया से नीचे उतारा।

बाबा बहुत घबराए थे। उन्होंने ननकू से कहा, "हालि-हालि कर रे बेटवा, चल शहर जाएवाला सड़क पर।''

ननकू दालान के दरवाज़े तक आया, लेकिन यह क्या? उसे लगा कि गाँव में नहीं नदी की बीच धार में खड़ा है वह। अब क्या करे, गाँव का ही पता नहीं था। किसी-किसी के घर का छप्पर भर दिख रहा था। पानी उसकी छाती को छूने लगा था। अब तो आँगन पार कर कोठरी में भी नहीं जा सकता। अब क्या होगा? ननकू को रोना आने लगा। अगर अकेला होता तो शायद ज़ोर-ज़ोर से रोने लगता, लेकिन

बाबा का ध्यान आते ही लगा कि इन पाँच प्राणियों के घर में तो वही एक बहादुर बच्चा है, उसे बाबा को बचाना होगा।

बस, उसने आव देखा न ताव, झट घर के छप्पर पर चढ़ गया। घर दालान से लगा था और उसका छप्पर नीचे पड़ता था, पूरा ज़ोर लगाकर उसने बाबा को ऊपर खींचा। अभी वे लोग ऊपर पहुँचकर सँभले भी न थे कि घर की दीवारें ढह गईं और छप्पर पानी की धार में तिनके-सा बहने लगा। ननकू और बाबा ने छप्पर ज़ोर से पकड़ लिया।

काली बदरी के कारण चारों ओर घुप्प अँधेरा छाया हुआ था। ननकू को कुछ नहीं दिख रहा था। बस, अथाह पानी ही पानी!

फिर अंधेरा कुछ छँटने लगा और ननकू ने देखा कि वह नदी की बीच धारा में बहा जा रहा है। उसके आस-पास टूटे पेड़, झोंपड़ी के छप्पर, आदमी तथा जानवर सब कुछ नदी की धार में बड़े वेग मे बहे जा रहे हैं।

फिर उसे ऊँचे-ऊँचे घर दिखने लगे और वह समझ गया कि वह शहर के पास बह रहा है। शहर को देखकर उसको थोड़ा ढाढ़स बँधा। किनारे पर खड़े लोगों को वह हाथ हिला-हिलाकर इशारा करने लगा। दो-चार लोग नाव लेकर बढ़े भी लेकिन बीच धार तक आना कठिन था। ननकू का छप्पर आगे निकल गया। तभी एक पुल दिखा। पुल पर बहुत सारे लोग खड़े थे। ननकू सोच में डूबा था कि कैसे बचा जाए? तभी उसकी नज़र छप्पर पर पड़ी हुई रस्सी पर गई। ननकू ने झटपट उसका एक सिरा छप्पर के बाँस में बाँधा और चिल्लाकर बोला, ''बाबा, कसके पकड़ लिहऽ।''

पुल और पास आ गया। बाढ़ के कारण पुल और जलस्तर के बीच की दूरी कम हो गई थी। जैसे ही वे पुल के नजदीक पहुँचे, ननकू ने रस्सी के दूसरे सिरे को घुमाकर बड़े वेग से ऊपर पुल पर फेंका। पुल पर खड़े लोगों ने उसे थाम लिया। छप्पर एक झटके के साथ पुल के पाये से लगकर रुक गया। जैसे-तैसे ननकू और उसके बाबा को पानी से बाहर निकाला गया।

लोग एक नन्हें बच्चे के साहस और सूझबूझ को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे। अब उसने किसी तरह अपने बापू को खोज निकालना चाहा। उसे अपने बापू का पता मालूम था। खोजते-खोजते आखिर उनका झोंपड़ा मिल गया, किंतु वे वहाँ नहीं थे। बाढ़ की खबर सुन कर वे गाँव चले गए थे। बगल में ही जवाहर चाचा का झोंपड़ा था। दोनों जवाहर चाचा के पास गए। उन्होंने खुशी-खुशी उन दोनों को अपने यहाँ ही ठहराया। ननकू और उसके बाबा चार दिन तक वहाँ टिके रहे और जब नदी का पानी उतरने लगा तो ननकू जवाहर चाचा के साथ गाँव की ओर चल पड़ा।

गाँव में अभी भी पानी भरा हुआ था। कितने मानुष-मवेशी बह गए, कुछ पता नहीं। लेकिन ननकू का परिवार पटना जाने वाली सड़क पर अपने प्राण बचा कर सुरक्षित पड़ा हुआ था।

पहले-पहल दिदिया मिली और वह ननकू से लिपट कर रोने लगी। गाँव भर के लोग इकट्ठे हो गए, पर अम्मा?

..... अम्मा कहाँ थीं?

"अम्मा कहाँ हैं?" ननकू के पूछने पर दिदिया को होश आया और उसने इशारे से अम्मा को दिखाया। वे सूनी आँखों से टकटकी लगाए बाढ़ के पानी में न जाने क्या देख रहीं थीं। जब ननकू जाकर उसकी गोद में बैठा तो वह दहाड़ मार कर रोने लगीं।

बाद में ननकू को पता चला कि उसके साहस का समाचार दिल्ली तक पहुँच गया है और 'परसिडेंट' से उसे कुछ इनाम भी मिलने वाला है। ननकू मारे खुशी के झूम उठा। घर-परिवार, गाँव वालों को उस पर गर्व था।

-मंजू मधुकर

शब्दार्थ

घाम	– धूप
हालि-हालि	– जल्दी-जल्दी
सख्त	– कड़ा
हुलसकर	– प्रसन्न होकर
ढाढ़स	– दिलासा
अदम्य	– प्रबल, प्रचंड
परसिडेंट	– राष्ट्रपति

अभ्यास

किसने कहा, किससे कहा ?

1. बताइए, ये कथन किसने कहा, किससे कहा–

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) का रे ननकूआ, आज इसकूल न जवहीं रे ऽऽऽ?	----------------	----------------
(ख) ननकू रे ऽऽऽ अरे ननकू !	----------------	----------------
(ग) सीधे घर जइहें रे, लगहई जोर से पानी पड़तई।	----------------	----------------
(घ) बाबा घरबा के भीतर चलऽ, जोर से पानी पड़तई।	----------------	----------------
(ङ) अरे, हम तो केतना देरी से बइठल हली ।	----------------	----------------
(च) हमर मान तो, ई सब गोबर मट्टी में गाड़ देहीं। खाद बन जइतउ ।	----------------	----------------

बातचीत के लिए

1. ननकू गुल्ली-डंडा खेलता था। आप कौन-कौन से खेल खेलते हैं?
2. गुल्ली-डंडा कैसे खेलते हैं? इसमें कितने खिलाड़ी होते हैं?
3. गुल्ली-डंडा खेलते समय क्या- क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?
4. ललमुनियाँ कौन थी? ननकू ने उसके परिवार की क्या सहायता की?
5. ननकू को कब लगा कि अब उसे घर की तरफ जाना चाहिए और क्यों?

पाठ में से

1. ननकू की दीदी ने उसे किस काम के लिए आवाज़ दी?
2. ननकू ने गोबर को मिट्टी में गाड़ने की बात क्यों की?
3. ननकू ने अपनी और दादाजी की जान कैसे बचाई?
4. ननकू की माँ उसे देख क्यों रोने लगी?
5. ननकू के पिताजी कहाँ चले गए थे?

बाढ़ का कहर

1. बाढ़ के कारण ननकू के गाँव में बहुत नुकसान हुआ। बाढ़ के कारण आपके गाँव/शहर में क्या नुकसान होता है?
2. बाढ़ से बचाव या बाढ़ को रोकने के क्या उपाय हो सकते हैं?

अनुमान और कल्पना

1. क्या होता अगर –
   - घर का छप्पर भी पानी में पहले ही बह गया होता?
   - छप्पर के बाँस से बँधी रस्सी टूट जाती?
2. ननकू ने कैसे अनुमान लगाया कि वह शहर के पास से बह रहा है?

आपकी दुनिया

'बरसात का महीना ननकू को बहुत प्रिय है। आम-जामुन के पेड़ पर चढ़ना और गुल्ली-डंडा खेलना अच्छा लगता है।'

1. आपको क्या-क्या पसंद है और क्यों? तालिका में लिखिए –

	पसंद	कारण
महीना		
खेल		
भोजन		
जगह		

2. क्या आपके भाई-बहन, माँ-पिताजी से आपकी शिकायतें करते हैं? ऐसी ही किसी एक घटना के बारे में बताइए।

भाषा के रंग

1. नीचे दिए कथनों को हिंदी भाषा में बोलिए और लिखिए –

(क) न मइया, इसकूल तक नदी के पानी चढ़ अएलइ हे।

(ख) ननकुआ, हालि से गोइठबा थपवा देहीं तो, बड़ी जोर से पानी आवइत हई।

(ग) बाबा नीमिया तर बइठल होथीं ।

(घ) ई वार कवन नछत्तर में पानी पड़े लगलई कि छुटते न हई ।

(ङ) कहाँ चल गेलहीं हल रे? चल दू कौर माड़–भात खा ले, अउर सामान उठाहीं।

----

2. **हुलसकर बाबा ने ननकू को पकड़ लिया।**
हुलसकर बाबा ने उसे पकड़ लिया।

(क) दूसरे वाक्य में 'उसे' शब्द किसकी जगह आया है? ---------------------------

(ख) 'ननकू' शब्द क्या है? संज्ञा/विशेषण ? सही की निशान (✓) लगाइए।

(ग) **संज्ञा की जगह आने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं।** दूसरे वाक्य में सर्वनाम शब्द कौन–सा है? --

(घ) नीचे दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम शब्द को छाँटकर लिखिए। यह भी बताइए कि उनका प्रयोग किसके लिए हुआ है?

वाक्य	सर्वनाम शब्द	किसके लिए
• उसके कई संगी–साथी उधर ही रहते थे।	---------------	---------------
• हम तो केतना देरी से बइठल हली।	---------------	---------------
• देखा, उसकी दादी और अम्मा सामान उठाने में लगी हैं।	---------------	---------------
• जल्दी से उनको खटिया से नीचे उतारा।		

6. **नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –**

(क) आव देखा न ताव – --

(ख) टकटकी लगाना – --

(ग) दहाड़ मारकर रोना – --

(घ) खुशी से झूम उठना – --

(ङ) अँधेरे का दीपक होना – --

(च) बुढ़ापे की लाठी होना – --